रोमियों

1 पौलुस जो यीशु मसीह का दास है, जिसे परमेश्वर
ने प्रेरित होने के लिए बुलाया, जिसे परमेश्वर के
उस सुसमाचार के प्रचार के लिए चुना गया
2 जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा
कर दी गयी 3 जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से
दाऊद का वंशज है 4 किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे
हुओं में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य के साथ
परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह हमारा
प्रभु है। 5 इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई मिली,
ताकि सभी ग़ैर यहूदियों में, उसके नाम में, वह आस्था जो
विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके। 6 उनमें परमेश्वर
के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये तुम लोग भी बुलाये
गये हो।
7 वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और परमेश्वर
के प्यारे हो, जो परमेश्वर के पवित्र जन होने के लिए
बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ।
हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें उसका अनुग्रह और शांति मिले।

धन्यवाद की प्रार्थना

8 सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि
तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं हो रही है।
9 प्रभु, जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश
देते हुए मैं अपने हृदय से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है, कि
मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ। 10 अपनी प्रार्थनाओं
में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि परमेश्वर की
इच्छा से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा किसी तरह पूरी
हो। 11 मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैं तुमसे मिल
कर कुछ आत्मिक उपहार देना चाहता हूँ, जिससे तुम
शक्तिशाली बन सको। 12 या मुझे कहना चाहिये कि मैं
जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के विश्वास से हम
परस्पर प्रोत्साहित हों। 13 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें
पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना बार-बार चाहा है
ताकि जैसा फल मैंने ग़ैर यहूदियों में पाया है, वैसा ही तुमसे
भी पा सकूँ, किन्तु अब तक बाधा आती ही रही।
14 मुझ पर यूनानियों और ग़ैर यूनानियों, बुद्धिमानों और
मूर्खों सभी का क़र्ज़ है। 15 इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को
भी सुसमाचार का उपदेश देने को तैयार हूँ।
16 मैं सुसमाचार के लिए शर्मिंदा नहीं हूँ क्योंकि उसमें
पहले यहूदी और फिर ग़ैर यहूदी-जो भी उसमें विश्वास
रखता है-उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य
है। 17 क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर
मनुष्य को अपने प्रति सही कैसे बनाता है। यह आदि से
अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में लिखा
है, "धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"

सबने पाप किया है

18 उन लोगों के-जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं, बुरे
कर्मों और हर बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप
प्रकट होगा। 19 और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर के
बारे में वे पूरी तरह जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसे
उन्हें जनाया है। 20 जब से संसार की रचना हुई उसकी
अदृश्य-विशेषताएँ अनन्त शक्ति और परमेश्वरत्व-साफ
साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह
जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं। इसलिए लोगों
के पास कोई बहाना नहीं। 21 यद्यपि वे परमेश्वर को जानते
हैं किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान या धन्यवाद
नहीं देते। बल्कि वे अपने विचारों में निरर्थक हो गये।
और उनके जड़ मन अन्धेरे से भर गये। 22 वे बुद्धिमान
होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये। 23 और अविनाशी
परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, चिड़ियाओं,

पशुओं और साँपो से मिलती जुलती मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।

24इसीलिये परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे दुराचार में पड़ कर एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे। 25उन्होंने झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और वे सृष्टि के बनाने वाले को छोड़ कर उसकी बनायी सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य है। आमीन।

26इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगीं। 27इसी तरह पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़ दिया और वे आपस में ही वासना में जलने लगे। और पुरुष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म करने लगे। उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने लगा।

28और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से मना कर दिया सो परमेश्वर ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो नहीं करने चाहिये थे। 29वे हर तरह के अधर्म, पाप, लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या, लड़ाई-झगड़े, छल-छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा अहित सोचते हैं। वे कहानियाँ घड़ते रहते हैं। 30वे पर निन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्दण्ड हैं, अहंकारी हैं, बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं और माता-पिता की आज्ञा नहीं मानते। 31वे मूढ़, वचन-भंग करने वाले, प्रेम-रहित और निर्दय हैं। 32चाहे वे परमेश्वर की धर्म-पूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो ऐसी बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन कामों को करते हैं, बल्कि वैसा करने वालों का समर्थन भी करते हैं।

तुम लोग भी पापी हो

2 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। 2अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। 3किन्तु अरे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा। 4या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति और धैर्य को हीन समझता है? और इस बात की उपेक्षा करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ़ ले जाती है। 5किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा नहीं करने वाले मन के कारण उसके क्रोध को अपने लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा। 6परमेश्वर हर किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। 7जो लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त जीवन देगा। 8किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा। 9हर उस मनुष्य पर दुःख और संकट आएँगे जो बुराई पर चलता है। पहले यहूदी पर और फिर ग़ैर यहूदी पर। 10और जो कोई अच्छाई पर चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी। पहले यहूदी को और फिर ग़ैर यहूदी को 11क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

12जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में रहते हुए पाप किया उन्हें व्यवस्था के अनुसार ही दण्ड मिलेगा। 13क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं हैं। बल्कि जो व्यवस्था पर चलते हैं वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे। 14सो जब ग़ैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से ही व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था आप हैं। 15वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही साक्षी देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है। 16ये बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर मनुष्य की छुपी बातों का, जिसका मैं उपदेश देता हूँ उस सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

यहूदी और व्यवस्था

17किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था में तेरा विश्वास है और अपने परमेश्वर का

तुझे अभिमान है 18और तू उसकी इच्छा को जानता है
और उत्तम बातों को ग्रहण करता है, क्योंकि व्यवस्था से
तुझे सिखाया गया है, 19तू यह मानता है कि तू अंधों का
अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके लिए तू प्रकाश
है, 20अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों का उपदेशक
है क्योंकि व्यवस्था में तुझे साक्षात् ज्ञान और सत्य ठोस
रूप में प्राप्त हैं 21तो तू जो औरों को सिखाता है, अपने को
क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी नहीं करने का उपदेश देता
है, स्वयं चोरी क्यों करता है? 22तू जो कहता है व्यभिचार
नहीं करना चाहिये, स्वयं व्यभिचार क्यों करता है? तू जो
मूर्तियों से घृणा करता है मंदिरों का धन क्यों छीनता है?
23तू जो व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर
परमेश्वर का निरादर क्यों करता है? 24"तुम्हारे कारण
ही ग़ैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता
है।" जैसा कि शास्त्र में लिखा है।

25यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने
का महत्त्व है पर यदि तुम व्यवस्था को तोड़ते हो तो तुम्हारा
ख़तना रहित होने के समान ठहरा। 26यदि किसी का
ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के पवित्र नियमों
पर चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित होने को भी
ख़तना न गिना जाये? 27वह मनुष्य जिसका शरीर से ख़तना
नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का पालन करता है, तुझे
अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास लिखित व्यवस्था का
विधान है, और जिसका ख़तना भी हुआ है, और जो
व्यवस्था को तोड़ता है,

28जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं
है। शरीर का ख़तना वास्तव में ख़तना नहीं है। 29सच्चा
यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना आत्मा
द्वारा मन का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था का। ऐसे
व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर
से की जाती है।

3 सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या
मूल्य? 2हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे
पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें ही सौंपा गया। 3यदि
उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या
उनका विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता को
बेकार कर देगा? 4निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई झूठा
भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा। जैसा कि शास्त्र में
लिखा है:

"ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो
और जब तेरा न्याय हो, तू विजय पाये।"
भजन संहिता 51:4

5सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता
सिद्ध करे तो हम क्या कहें? क्या यह कि वह अपना कोप
हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं एक मनुष्य
के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।) 6निश्चय ही नहीं,
नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।

7किन्तु तुम कह सकते हो: "जब मेरी मिथ्यापूर्णता से
परमेश्वर की सत्यपूर्णता और अधिक उजागर होती है तो
इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी करार
क्यों दिया जाता हूँ?" 8और फिर क्यों न कहें: "आओ!
बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।" जैसा कि हमारे
बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर आरोप लगाते
हैं कि हम ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी करार दिये जाने
योग्य हैं। वे सभी दोषी हैं

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से
किसी भी तरह अच्छे हैं, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि हम
यह दर्शा चुके हैं कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सभी
पाप के वश में हैं। 10शास्त्र कहता है:

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी!
11 कोई समझदार नहीं, एक भी!
कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता!
12 सब के सब भटके हैं एक से खोटे हुए,
साथ-साथ सब के सब, कोई भी यहाँ पर
दया तो दिखाता नहीं, एक भी नहीं!"
भजन संहिता 14:1-3

13 "उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं
वे अपनी जबान से छल करते हैं।"
भजन संहिता 5:9

"उनके होंठों पर नाग विष रहता है"
भजन संहिता 140:3

14 "शाप से-कटुता से मुँह भरे रहते हैं।"
भजन संहिता 10:7

15 "हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते है।
16 वे जहाँ कहीं जाते नाश ही
करते हैं, संताप देते हैं।
17 उनको शांति के मार्ग का पता नहीं।"
यशायाह 59:7-8

18 "उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।"

भजन संहिता 36:1

19अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। 20व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

21किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिए यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने इसकी साक्षी दी है। 22सभी विश्वासियों के लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के। 23क्योंकि सभी ने पाप किये हैं और सभी परमेश्वर की महिमा से विहीन हैं। 24किन्तु यीशु मसीह में संपन्न किए गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से वे एक सेंतमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं। 25परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा दिलाने के लिये, लोगों को दिया। उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में किया। ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने पहले उन्हें उनके पापों का दंड दिये बिना छोड़ दिया था 26आज भी अपना न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता भी है; उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।

27तो फिर घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो गया। भला कैसे? क्या उस विधि से जिसमें व्यवस्था जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है? नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है। 28कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है। 29या परमेश्वर क्या बस यहूदियों का है? क्या वह ग़ैर यहूदियों का नहीं है? हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है। 30क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके विश्वास के आधार पर ख़तना हुआ है, और उनको जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा, धर्मी ठहरायेगा। 31सो क्या हम विश्वास के आधार पर व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे हैं? निश्चय ही नहीं। बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली बना रहे हैं।

इब्राहीम का उदाहरण

4 तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को इसमें क्या मिला? 2क्योंकि यदि इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया जाता है तो उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं कर सकता। 3पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इब्राहीम ने परमेश्वर में विश्वास किया और वह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया"*

4काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं है, वह तो उसका अधिकार है। 5किन्तु यदि कोई व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास करता है, जो पापी को भी छोड़ देता है; तो उसका विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण बन जाता है। 6ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के आधार के बिना ही परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब कहता है:

7 "धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित कामों को
क्षमा मिली और जिनके पापों को
ढक दिया गया!
8 धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को
परमेश्वर ने गिना नहीं है!"

भजन संहिता 32:1-2

9तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये हैं जिनका ख़तना हुआ है, या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है जिनका ख़तना नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। 10तो यह कब गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह बिना ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं बल्कि ख़तना होने की स्थिति से पहले। 11और फिर एक चिह्न के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस विश्वास के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी जो उसने उस समय दर्शाया था जब उसका ख़तना नहीं हुआ था। इसीलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि बिना ख़तने के हैं

इब्राहीम ... गया उत्पत्ति 15:6

किन्तु विश्वासी हैं। (इसलिए वे भी धर्मी गिने जाएँगे) 12और वह उनका भी पिता है जिनका ख़तना हुआ है किन्तु जो हमारे पूर्वज इब्राहीम के विश्वास का जिसे उसने ख़तना होने से पहले प्रकट किया था, अनुसरण करते हैं।

विश्वास और परमेश्वर का वचन

13इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था बल्कि उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा उत्पन्न होती है। 14यदि जो व्यवस्था को मानते हैं, वे जगत के उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का कोई अर्थ नहीं रहता और वचन भी बेकार हो जाता है। 15लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर का क्रोध उपजता है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है वहाँ व्यवस्था का तोड़ना ही क्या?

16इसीलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास का फल है और यह सेंतमेत में ही मिलता है। इस प्रकार उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए सुनिश्चित है; न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को मानते हैं बल्कि उन सब के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वास रखते हैं। वह हम सब का पिता है। 17शास्त्र बताता है, "मैंने तुझे (इब्राहीम) अनेक राष्ट्रों का पिता बनाया।"* उस परमेश्वर की दृष्टि में वह इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका विश्वास है। परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और जो नहीं है, उसे अस्तित्व देता है।

18सभी मानवीय आशाओं के विरुद्ध अपने मन में आशा सँजोये हुए इब्राहीम ने उसमें विश्वास किया, इसीलिए वह कहे गये के अनुसार अनेक राष्ट्रों का पिता बना। "तेरे अनगिनत वंशज होंगे।"* 19अपने विश्वास को बिना डगमगाये और यह जानते हुए भी कि उसकी देह सौ साल की बूढ़ी मरियल हो चुकी है और सारा बाँझ है, 20परमेश्वर के वचन में विश्वास बनाये रखा। इतना ही नहीं, विश्वास को और मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमा दी। 21उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचन दिया है, उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है। 22इसलिये, "यह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"* 23शास्त्र का यह वचन कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल उसके लिये है, 24बल्कि हमारे लिये भी है परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, धार्मिकता स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु यीशु को फिर से जीवित किया। 25यीशु जिसे हमारे पापों के लिए मारे जाने को सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने के लिए, मरे हुओं में से पुन: जीवित किया गया।

परमेश्वर का प्रेम

5 क्योंकि हम अपन विश्वास के कारण परमेश्वर के लिए धर्मी हो गये हैं, सो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। 2उसी के द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का आनन्द लेते हैं। 3इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्ति धीरज को जन्म देती है। 4और धीरज से परखा हुआ चरित्र निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को जन्म देता है। 5और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।

6क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया। 7अब देखो, किसी धर्मी मनुष्य के लिए भी कोई कठिनाई से मरता है। किसी अच्छे आदमी के लिए अपने प्राण त्यागने का साहस तो कोई कर भी सकता है। 8पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो पापी ही थे; किन्तु यीशु ने हमारे लिए प्राण त्यागे।

9क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो गये हैं तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य ही बचाये जायेंगे। 10क्योंकि जब हम उसके बैरी थे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप कराया तो अब तो जब हमारा मेलमिलाप हो चुका है उसके जीवन से हमारी और कितनी अधिक रक्षा होगी। 11इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब उसमें आनन्द लेते हैं।

शास्त्र बताता ... बनाया उत्पत्ति 17:5
तेरे ... होंगे उत्पत्ति 15:5
यह विश्वास ... गया उत्पत्ति 15:6

आदम और यीशु

12इसीलिये एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती
पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु
सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे।
13अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप
था किन्तु जब तक कोई व्यवस्था नहीं होती किसी का
भी पाप नहीं गिना जाता 14किन्तु आदम से लेकर मूसा
के समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत उन
पर भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे
जैसे आदम पर। आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह)
आने वाला था। 15किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम
के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि उस एक
व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई
तो उस एक व्यक्ति यीशु मसीह की करुणा के कारण
मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी लोगों
की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक हैं। 16और
यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए परिणाम के
समान नहीं है क्योंकि दंड के हेतु न्याय का आगमन
एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह वरदान, जो
दोष–मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक अपराधों के बाद
आया था। 17अत: यदि एक व्यक्ति की उस अपराध के
कारण मृत्यु का शासन हो गया। तो जो परमेश्वर के
अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता का–जिसमें धर्मी
का निवास है–उपभोग कर रहे हैं–वे तो जीवन में उस
एक व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा और भी अधिक शासन
करेंगे।

18सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को
दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा
सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने
वाली धार्मिकता मिली। 19अत: जैसे उस एक व्यक्ति के
आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये
वैसे ही उस एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण
सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे। 20व्यवस्था का
आगमन इसलिये हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु जहाँ
पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक
बढ़ा। 21ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य किया ठीक
वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन को
लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह धार्मिकता के द्वारा
राज्य करे।

पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें
ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़ता रहे? 2निश्चय
ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही कैसे
जियेंगे? 3या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने यीशु
मसीह में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा
लिया है। 4सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से हम भी
उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे ताकि जैसे परम पिता की
महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से
जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।

5क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो
उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। 6हम यह
जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्त्व यीशु के साथ ही
क्रूस पर चढ़ा दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर
नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये पाप के दास न बने
रहें। 7क्योंकि जो मर गया वह पाप के बन्धन से छुटकारा
पा गया।

8और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा
विश्वास है कि हम उसी के साथ जियेंगे भी। 9हम जानते
हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया था अमर
है। उस पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा। 10जो मौत
वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए मरा है किन्तु
जो जीवन वह जी रहा है, वह जीवन परमेश्वर के लिए है।
11इसी तरह तुम अपने लिए भी सोचो कि तुम पाप के लिए
मर चुके हो किन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित
हो।

12इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का
वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न
चलो। 13अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के
लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुओं में से जी
उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और
अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के साधन
के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। 14तुम पर पाप का
शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के सहारे नहीं
जीते हो बल्कि परमेश्वर की अनुग्रह के सहारे जीते हो।

धार्मिकता के सेवक

15तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम
व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के

अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं। 16क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फिर चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता की तरफ ले जायेगी। 17किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि यद्यपि तुम पाप के दास थे, तुमने अपने मन से उन उपदेशों की रीति को माना जो तुम्हें सौंपे गये थे। 18तुम्हें पापों से छुटकारा मिल गया और तुम धार्मिकता के सेवक बन गए हो। 19(मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ जिसे सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना तुम लोगों के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर के अंगों को अपवित्रता और व्यवस्था हीनता के आगे उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था हीनता पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने शरीर के अंगों को दास के रूप में धार्मिकता के हाथों सौंप दो ताकि संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो।

20क्योंकि तुम जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से तुम पर कोई बन्धन नहीं था। 21और देखो उस समय तुम्हें कैसा फल मिला? जिसके लिए आज तुम शर्मिन्दा हो। जिसका अंतिम परिणाम मृत्यु है। 22किन्तु अब तुम्हें पाप से छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास बना दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण में ले जायेगी। जिसका अंतिम परिणाम है अनन्त जीवन। 23क्योंकि पाप का मूल्य तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर का सेंतमेतका वरदान है।

विवाह का दृष्टान्त

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से कह रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं) कि व्यवस्था का शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह जीता है? 2उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने पति के साथ विधान के अनुसार तभी तक बँधी है जब तक वह जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है। 3पति के जीते जी यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे व्यभिचारिणी कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर जाता है तो विवाह सम्बन्धी नियम उस पर नहीं लगता और इसीलिये यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी वह व्यभिचारिणी नहीं है।

4हे मेरे भाइयो, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये तुम भी मर चुके हो। इसीलिये अब तुम भी किसी दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे हुओं में से पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर के लिए कर्मों की उत्तम खेती कर सकें। 5क्योंकि जब हम मानव स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पाप–पूर्ण वासनाएँ जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर हावी थीं। ताकि हम कर्मों की ऐसी खेती करें जिसका अंत मौत में होता है। 6किन्तु अब हमें व्यवस्था से छुटकारा दे दिया गया है क्योंकि जिस व्यवस्था के अधीन हमें बंदी बनाया हुआ था, हम उसके लिये मर चुके हैं। और अब पुरानी लिखित व्यवस्था से नहीं, बल्कि आत्मा की नयी रीति से प्रेरित हो कर हम अपने स्वामी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

पाप से लड़ाई

7तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था पाप है? निश्चय ही नहीं। जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है? यदि व्यवस्था नहीं बताती, "जो अनुचित है उसकी चाहत मत करो" तो निश्चय ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि अनुचित इच्छा क्या है।" 8किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था का लाभ उठाते हुए मुझमें हर तरह की ऐसी इच्छाएँ भर दीं जो अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो मर गया। 9एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित था, किन्तु जब व्यवस्था का आदेश आया तो पाप जीवन में उभर आया। 10और मैं मर गया। वही व्यवस्था का आदेश जो जीवन देने के लिए था, मेरे लिये मृत्यु ले आया। 11क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने उसी व्यवस्था के आदेश के द्वारा मुझे छला और उसी के द्वारा मुझे मार डाला।

12इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र, धर्मी और उत्तम है। 13तो फिर क्या इसका यह अर्थ है कि जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण बना? निश्चय ही नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का इसलिये कारण बना कि पाप को पहचाना जा सके। और व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी भयानक पाप–पूर्णता दिखाई जा सके।

मानसिक द्वन्द्व

14क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है
और मैं हाड़-माँस का भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की
दासता के लिए बिका हुआ है। 15मैं नहीं जानता मैं क्या
कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता,
बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ।
16और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो
मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था उत्तम है। 17किन्तु
वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है,
बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है। 18हाँ, मैं जानता हूँ कि
मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव शरीर में किसी अच्छी
वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने की इच्छा तो मुझ में है
पर नेक काम मुझ से नहीं होते। 19क्योंकि जो अच्छा
काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं
नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ। 20और
यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो
वास्तव में उनका कर्त्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ,
बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है।

21इसीलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब
अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता
हूँ। 22अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को
सहर्ष मानता हूँ। 23पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही
नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चिन्तन पर
शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे
पाप की व्यवस्था का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे
शरीर में क्रियाशील है। 24मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे
इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा कौन
दिलायेगा? 25अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर
का धन्यवाद करता हूँ! सो अपने हाड़ माँस के शरीर से मैं
पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से
परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

आत्मा से जीवन

8 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में
स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के
अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।]*
2क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन
देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले
जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है। 3जिसे मूसा की वह व्यवस्था
जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण दुर्बल बना दी
गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को
हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर-जिससे हम पाप करते
हैं-उसकी भौतिक देह को पाप वाली बनाकर पाप को
निरस्त कर के पूरा किया। 4जिससे कि हमारे द्वारा, जो
देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की विधि से
जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।

5क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार
जीते हैं, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टिकी
रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते हैं, उनकी
बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं में लगी रहती
है। 6भौतिक मानव स्वभाव के बस में रहने वाले मन का
अन्त मृत्यु है; किन्तु आत्मा के वश में रहनेवाली बुद्धि का
परिणाम है जीवन और शांति। 7इस तरह भौतिक मानव
स्वभाव से अनुशासित मन परमेश्वर का विरोधी है।
क्योंकि वह न तो परमेश्वर के नियमों के अधीन है और
न हो सकता है। 8और वे जो भौतिक मानव स्वभाव के
अनुसार जीते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन
नहीं हो, बल्कि आत्मा के अधीन हो यदि वास्तव में तुममें
परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि किसी में
यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है।
10दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह
पाप के हेतु मर चुकी है पवित्र आत्मा, परमेश्वर के साथ
तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन बन जाती
है। 11और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से
जिलाया था, तुम्हारे भीतर वास करती है, तो वह परमेश्वर
जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे
नाशवान शरीरों को अपनी आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर
बसती है, जीवन देगा।

12इसलिए मेरे भाइयो, हम पर इस भौतिक शरीर का
क़र्ज़ तो है किन्तु ऐसा नहीं कि हम इसके अनुसार जियें।
13क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो
मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों
का अंत कर दोगे तो तुम जी जाओगे।

14जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे
परमेश्वर की संतान हैं। 15क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें
मिली है, तुम्हें फिर से दास बन डरने के लिए नहीं है,

क्योंकि ... है कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है

बल्कि वह आत्मा जो तुमने पायी है तुम्हें परमेश्वर की संपालित संतान बनाती है। जिससे हम पुकार उठते हैं, "हे अब्बा, हे पिता!" 16वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। 17और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके साथ दुख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी ही।

हमें महिमा मिलेगी

18क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ प्रकट होने वाली भावी महिमा के आगे कुछ भी नहीं है। 19क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का इंतज़ार कर रही है जब परमेश्वर की संतान को प्रकट किया जायेगा। 20यह सृष्टि नि:सार थी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसकी इच्छा से जिसने इसे इस आशा के अधीन किया 21कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पा कर परमेश्वर की संतान की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।

22क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि पीड़ा में कराहती और तड़पती रही है। 23न केवल यह सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला है, अपने भीतर कराहते रहे हैं। क्योंकि हमें उसके द्वारा पूरी तरह अपनाये जाने का इंतजार है कि हमारी देह–मुक्ति हो जायेगी। 24हमारा उद्धार हुआ है। इसी से हमारे मन में आशा है किन्तु जब हम जिसकी आशा करते हैं, उसे देख लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो दिख रहा है उसकी आशा कौन कर सकता है। 25किन्तु यदि जिसे हम देख नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो धीरज और सहनशीलता के साथ उसकी बाट जोहते हैं।

26ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करने आती है क्योंकि हम नहीं जानते कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा स्वयं ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, हमारे लिए विनती करती है। 27किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर के पवित्र जनों के लिए मध्यस्थता करती है।

28और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा परमेश्वर के भक्तों के साथ मिल कर वह काम करता है जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें उसके प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया है। 29जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में ठहराया ताकि बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई बन सके। 30जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया, उन्हें भी उसने बुलाया और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी प्रदान की।

परमेश्वर का प्रेम

31तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है? 32उसने जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा बल्कि उसे हम सब के लिए मरने को सौंप दिया। वह भला हमें उसके साथ और सब कुछ क्यों नहीं देगा? 33परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो, दोष लगायेगा? वह परमेश्वर ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता है। 34ऐसा कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु वह है जो मर गया और (और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि) उसे फिर जिलाया गया। जो परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है और हमारी ओर से विनती भी करता है 35कौन है जो हमें मसीह के प्यार से अलग करेगा? यातना या कठिनाई या अत्याचार या अकाल या नंगापन या जोख़िम या तलवार? 36जैसा कि शास्त्र कहता है:

"तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा जाता है।
हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।"

भजन संहिता 44:22

37तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब बातों में हम एक शानदार विजय पा रहे हैं। 38क्योंकि मैं मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत और न शासन करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की कोई वस्तु और न भविष्य की कोई वस्तु, न आत्मिक शक्तियाँ, 39न कोई हमारे ऊपर का, और न हमसे नीचे का, न सृष्टि की कोई और वस्तु हमें प्रभु के उस प्रेम से, जो हमारे भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें अलग कर सकेगी।

परमेश्वर और यहूदी लोग

9 मसीह में मैं सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता और मेरी चेतना जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित

है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है 2कि मुझे गहरा दुःख है
और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है। 3काश मैं चाह सकता
कि अपने भाई बंदों और दुनियावी संबन्धियों के लिए मैं
मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे अलग
हो जाता। 4जो इस्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की
संपालित संतान होने का अधिकार है, जो परमेश्वर की
महिमा का दर्शन कर चुके हैं, जो परमेश्वर के करार
के भागीदार हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना
और वचन प्रदान किया गया है। 5पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध
रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में
पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है!
आमीन।

6ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं
किया है क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्राएली
नहीं हैं। 7और न ही इब्राहीम के वंशज होने के कारण वे
सब सचमुच इब्राहीम की संतान हैं। बल्कि (जैसा परमेश्वर
ने कहा), "तेरे वंशज इसहाक के द्वारा अपनी परम्परा
बढ़ाएंगे।"* 8अर्थात् यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर
शरीर से पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर के वंशज हैं,
बल्कि परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके
वंशज माने जाते हैं। 9वचन इस प्रकार कहा गया था:
"निश्चित समय पर मैं लौटूँगा और सारा पुत्रवती होगी।"*

10इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे पूर्व
पिता इसहाक से गर्भवती हुई 11तो बेटों के पैदा होने से
पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले कहा
गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो जो
चुनाव से सिद्ध होता है। 12और जो व्यक्ति के कर्मों पर
नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है जो बुलाने
वाला है। रिबका से कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे बेटे की
सेवा करेगा।"* 13शास्त्र कहता है: "मैंने याकूब को चुना
और इसाऊ को नकार दिया।"*

14तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है?
15निश्चय ही नहीं। क्योंकि उसने मूसा से कहा था, "मैं
जिस किसी पर भी दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा।
और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना चाहूँगा, अनुग्रह
करूँगा।"* 16इसलिये न तो यह किसी की इच्छा पर निर्भर
करता है और न किसी की दौड़ धूप पर बल्कि दयालु
परमेश्वर पर निर्भर करता है। 17क्योंकि शास्त्र में
परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, "मैंने तुझे इसीलिए खड़ा
किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ। और
मेरा नाम समूची धरती पर घोषित किया जाये।"* 18सो
परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे
चाहता है कठोर बना देता है।

19तो फिर तू शायद मुझ से कहे, "यदि हमारे कर्मों का
नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है तो फिर भी वह उसमें
हमारा दोष क्यों समझता है?" आख़िरकार उसकी इच्छा
का विरोध कौन कर सकता है? 20मनुष्य तू कौन होता
है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे? क्या कोई रचना
अपने रचने वाले से पूछ सकती है, "तूने मुझे ऐसा क्यों
बनाया?" 21क्या किसी कुम्हार को मिट्टी पर यह
अधिकार नहीं है कि वह किसी एक लौंदे से एक भाँडा
विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा हीन प्रयोजन के लिए
बनाये?

22किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध
दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन भाँडों की,
जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को था,
बड़े धीरज के साथ सही, 23उसने उनकी सही ताकि वह
उन भाँड़ों के लाभ के लिए जो दया के पात्र थे और जिन्हें
उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर
अपनी महिमा प्रकट कर सके। 24अर्थात् हम जिन्हें उसने
न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि ग़ैर यहूदियों में से
भी 25जैसा कि होशे की पुस्तक में लिखा है:

"जो लोग मेरे नहीं थे उन्हें मैं अपना कहूँगा।
और वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी
मैं उसे प्रिया कहूँगा।"

होशे 2:23

26 "और वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में
उनसे कहा गया था,
'तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।'
वहीं वे जीवित परमेश्वर की
सन्तान कहलाएँगे।"

होशे 1:10

तेरे वंशज ... बढ़ाएंगे उत्पत्ति 21:12
निश्चित ... होगी उत्पत्ति 18:10,14
बड़ा ... करेगा उत्पत्ति 25:23
मैंने याकूब ... दिया मलाकी 1:2-3

मैं ... करूँगा निर्गमन 33:19
मैंने ... जाये निर्गमन 9:16

27और यशायाह इस्राएल के बारे में पुकार कर कहता है:

"यद्यपि इस्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के
कणों के समान असंख्य हैं तो भी उनमें से केवल
थोड़े से ही बच पायेंगे। 28क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर
अपने न्याय को पूरी तरह से और जल्दी ही पूरा
करेगा।"*

29और जैसी कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

"यदि सर्वशक्तिशाली प्रभु हमारे लिए वंशज न
छोड़ता तो हम सदोम जैसे और अरोमा जैसे ही हो
जाते।"*

30तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए। 31किन्तु इस्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी सके। 32क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है। 33जैसा कि शास्त्र कहता है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ
जो ठोकर दिलाता है और
एक चट्टान जो अपराध कराती है।
किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है,
उसे कभी निराश नहीं होना होगा।"

यशायाह 8:14;23:16

10 हे भाइयो, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर से उन सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि उनका उद्धार हो 2क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर नहीं टिकी है 3क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर से मिलती है और वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं स्वीकारा। 4मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के लिए धार्मिक हो।

5धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है, मूसा ने लिखा है, "जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।"* 6किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता है, "तू अपने से यह मत पूछ, 'स्वर्ग में ऊपर कौन जायेगा?'*" (यानी, "मसीह को नीचे धरती पर लाने।") 7"या, 'नीचे पाताल में कौन जायेगा?'*" (यानी, "मसीह को धरती के नीचे से ऊपर लाने।" यानी मसीह को मरे हुओं में से वापस लाने।") 8शास्त्र यह कहता है, "वचन तेरे पास है, तेरे ओठों पर है और तेरे मन में है।"* यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते है। 9कि यदि तू अपने मुँह से कहे, "यीशु मसीह प्रभु है" और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो जायेगा। 10क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है। 11शास्त्र कहता है, "जो कोई उसमें विश्वास रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।"* 12यह इसलिये है कि यहूदियों और ग़ैर यहूदियों में कोई भेद नहीं क्योंकि सब का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया उन सब के लिये, जो उसका नाम लेते हैं, अपरम्पार है। 13"हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।"*

14किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका नाम कैसे पुकारेंगे? और वे जिन्होने उसके बारे में सुना ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे कैसे सुन सकेंगे? 15और उपदेशक तब तक उपदेश कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो? जैसा कि शास्त्रों में कहा है: "सुसमाचार लाने वालों के चरण कितने सुंदर हैं।"*

16किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह कहता है, "हे प्रभु, हमारे उपदेश को किसने स्वीकार किया?"* 17सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है और उपदेश तब सुना जाता है जब कोई मसीह के विषय में उपदेश देता है।

यद्यपि ... करेगा यशायाह 10:22-23
यदि ... जाते यशायाह 1:9
जो ... रहेगा लैव्य. 18:5
तू अपने ... कौन जायेगा व्यवस्था. 30:12
मसीह ... लाने व्यवस्था. 30:12
वचन ... है व्यवस्था. 30:14
जो ... पड़ेगा यशा. 28:16
हर ... पायेगा योएल 2:32
सुसमाचार ... है यशा. 52:7
हे प्रभु ... किया यशा. 53:1

18किन्तु मैं कहता हूँ, "क्या उन्होंने हमारे उपदेश को
नहीं सुना?" हाँ, निश्चय ही। शास्त्र कहता है:

"उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया
और उनके वचन जगत के एक छोर से
दूसरे छोर तक पहुँचे।"

भजन संहिता 19:4

19किन्तु मैं पूछता हूँ, "क्या इस्राएली नहीं समझते थे?"
मूसा कहता है:

"पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के
द्वारा जो वास्तव में कोई जाति नहीं है,
डाह पैदा करूँगा।
मैं विश्वासहीन जाति के द्वारा
तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।"

व्यवस्था विवरण 32:21

20फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

"मुझे उन लोगों ने पा लिया
जो मुझे नहीं खोज रहे थे।
मैं उनके लिए प्रकट हो गया
जो मेरी खोज खबर में नहीं थे।"

यशायाह 65:1

21किन्तु परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में कहा है,
"मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले और अपने विरोधियों
के आगे हाथ फैलाए रहा।"*

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

11 तो मैं पूछता हूँ, "क्या परमेश्वर ने अपने ही
लोगों को नकार नहीं दिया?" निश्चय ही नहीं।
क्योंकि मैं भी एक इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और
बैंजामिन के गोत्र से हूँ। 2परमेश्वर ने अपने लोगों को
नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था। अथवा
क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या
कहता है जब एलिय्याह परमेश्वर से इस्राएल के लोगों के
विरोध में प्रार्थना कर रहा था? 3"हे प्रभु, उन्होंने तेरे
नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़ कर गिरा
दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मार
डालने का जतन कर रहे हैं।"* 4किन्तु तब परमेश्वर ने
उसे कैसे उत्तर दिया था, "मैंने अपने लिए सात हजार लोग
बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।"*
5सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके
अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं। 6और यदि यह परमेश्वर
के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं, यह
उन कर्मों का परिणाम नहीं है। नहीं तो परमेश्वर की
अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं ठहरती।

7तो इससे क्या? इस्राएल के लोग जिसे खोज रहे थे, वे
उसे नहीं पा सके। किन्तु चुने हुओं को वह मिल गया।
जबकि बाकी सब को जड़ बना दिया गया। 8शास्त्र कहता
है:

"परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्य
आत्मा प्रदान की"

यशायाह 29:10

"ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं
और ऐसे कान दिए जो सुन नहीं सकते थे।
और यही दशा ठीक आज तक बनी हुई है।"

व्यवस्था विवरण 29:4

9 दाऊद कहता है:

"अपने ही भोगों में फँसकर वे बंदी बन जाएँ
उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।
10 उनकी आँखें धुँधली हो जायें
ताकि वे देख न सकें और तू उनकी
पीड़ाओं तले, उनकी कमर
सदा-सदा झुकाए रखे।"

भजन संहिता 69:22-23

11सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि
वे गिर कर नष्ट हो जायें? निश्चय ही नहीं। बल्कि उनके
गलती करने से ग़ैर यहूदी लोगों को छुटकारा मिला ताकि
यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो। 12इस प्रकार यदि उनके ग़लती
करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ है और यदि
उनके भटकने से ग़ैर यहूदियों का लाभ है तो उनकी
संपूर्णता से तो बहुत कुछ होगा।

13यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो।
क्योंकि मैं विशेष रूप से ग़ैर-यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ,
मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ 14इस आशा से
कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें से
कुछ का उद्धार करूँ। 15क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा
उनके नकार दिये जाने से जगत् में परमेश्वर के साथ

मैं ... रहा यशा. 65:2

हे प्रभु ... है 1 राजा 19:10-14

मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुओं में से जिलाया जाना नहीं होगा?

16यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह सम्पूर्ण ही पवित्र नहीं है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।

17किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं और तू जो एक जँगली जैतून की टहनी है उस पर पेबंद चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की जड़ों की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे 18तो तुझे उन टहनियों के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयीं, अभिमान नहीं करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद रख यह तू नहीं है जो जड़ों को पाल रहा है, बल्कि यह तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है। 19अब तू कहेगा, "हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिये तोड़ी गयीं कि मेरा पेबंद चढ़े।" 20यह सत्य है, वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने विश्वास के बल पर अपनी जगह टिके रहे। इसलिये इसका गर्व मत कर बल्कि डरता रह। 21यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने देगा।

22इसलिये तू परमेश्वर की कोमलता को देख और उसकी कठोरता पर ध्यान दे। यह कठोरता उनके लिए है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिये है यदि तू अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से तू भी काट फेंका जायेगा। 23और यदि वे अपने अविश्वास में न रहें तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे। 24जब तुझे प्राकृतिक रूप से जँगली जैतून के पेड़ से एक शाखा की तरह काट कर प्रकृति के विरुद्ध एक उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़ की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर से क्यों नहीं जोड़ दी जायेंगी।

25हे भाइयो! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं रखना चाहता। (कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने लगो) कि इस्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर बना दिए गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि काफी ग़ैर यहूदी परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं बन जाते। 26और इस तरह समुचे इस्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:

"उद्धार करने वाला सिय्योन से आयेगा।
वह याकूब के परिवार से
सभी बुराइयाँ दूर करेगा।
27 मेरा यह वाचा उनके साथ तब होगा
जब मैं उनके पापों को हर लूँगा।"

यशायाह 59:20-21; 27:9

28जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित में परमेश्वर के शत्रु हैं किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं। 29क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी तरफ़ से अपना मन कभी नहीं बदलता। 30क्योंकि जैसे तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे किन्तु अब तुम्हें उसकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर की दया प्राप्त है। 31वैसे ही अब वे उसकी आज्ञा नहीं मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर है। ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले। 32क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसीलिए डाल रखा है कि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

33परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने गहन हैं; उसके रास्ते कितने गूढ़ हैं। शास्त्र कहता है:

34 "प्रभु के मन को कौन जानता है?
और उसे सलाह देने वाला कौन हो सकता है"

यशायाह 40:13

35 "परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है
कि वह किसी को उसके बदले कुछ दे।"

अय्यूब 41:11

36क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब स्थिर हैं और यह उसी के लिए है। उसकी सदा महिमा हो! आमीन।

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

12 इसलिए हे भाइयो, परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को

प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है। 2अब और आगे इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को नया करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे लिए क्या चाहता है। यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।

3इसलिये उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने मुझे दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात् जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार अपने को समझना चाहिये। 4क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों का काम एक जैसा नहीं है। 5हम अनेक हैं किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। 6तो फिर उसके अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग-अलग उपहार मिले हैं, हम उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी की क्षमता दी गयी है तो वह उसके पास जितना विश्वास है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे। 7यदि किसी को सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा के लिये अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का काम मिला है तो उसे अपने आप को प्रचार में लगाना चाहिये। 8यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी चाहिये। यदि किसी को दान देने का उपहार मिला है तो उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को अगुआई करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के साथ अगुआई करे। जिसे दया दिखाने को मिली है, वह प्रसन्नता से दया करे।

9तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बदी से घृणा करो। नेकी से जुड़ो। 10भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो। आपस में एक दूसरे को आदर के साथ अपने से अधिक महत्त्व दो। 11उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो। 12अपनी आशा में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो। 13परमेश्वर के जनों की आवश्यकताओं में हाथ बटाओ। अतिथि-सत्कार के अवसर ढूँढते रहो।

14जो तुम्हें सताते हों उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप मत दो, आशीर्वाद दो। 15जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो। जो दुःखी हैं, उनके दुःख में दुखी होओ। 16मेल-मिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की संगति करो। अपने को बुद्धिमान मत समझो।

17बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी लोगों की आँखों में जो अच्छा हो उसे ही करने की सोचो। 18जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शांति से रहो। 19किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ दो क्योंकि शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा काम है। प्रतिदान में दूँगा।"* 20"बल्कि तू तो यदि तेरा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन करा, यदि वह प्यासा है तो उसे पीने को दे। क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह तुझसे शर्मिन्दा होगा।"* 21बदी से मत हार बल्कि अपनी नेकी से बदी को हरा दे।

13 हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता स्वीकार नी चाहिये। क्योंकि शासन का अधिकार परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद हैं उन्हें परमेश्वर ने नियत किया है। 2इसलिए जो सत्ता का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं, वे दण्ड पायेंगे। 3अब देखो कोई शासक, उस व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि उसी को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से नहीं डरना चाहते हो, तो भले काम करते रहो। तुम्हें सत्ता की प्रशंसा मिलेगी। 4जो सत्ता में है वह परमेश्वर का सेवक है वह तेरा भला करने के लिए है। किन्तु यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी तलवार बेकार नहीं है। वह परमेश्वर का सेवक है जो बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है। 5इसलिये समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण बल्कि तुम्हारी अपनी चेतना के कारण।

6इसीलिये तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो अपने कर्तव्यों को ही पूरा करने में लगे रहते हैं। 7जिस किसी का तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे। जिसकी चुंगी तुझ पर निकलती है, उसे चुंगी दे। जिससे तुझे डरना चाहिये, तू उससे डर। जिसका आदर करना चाहिये उसका आदर कर।

प्रभु ... दूँगा व्यवस्था. 32:35

बल्कि ... होगा नीति. 25:21-22

प्रेम ही विधान है

8आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋ ण अपने ऊपर
मत रख क्योंकि जो अपने साथियों से प्रेम करता है, वह
इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है। 9मैं यह इसलिये
कह रहा हूँ, "व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी
मत कर, लालच मत रख।"* और जो भी दूसरी व्यवस्थाएँ
हो सकती हैं, इस वचन में समा जाती हैं, "तुझे अपने साथी
को ऐसे ही प्यार करना चाहिये, जैसे तू अपने आप को
करता है।"* 10प्रेम अपने साथी का बुरा कभी नहीं करता।
इसीलिए प्रेम करना व्यवस्था के विधान को पूरा करना
है।

11यह सब कुछ तुम इसलिये करो कि जैसे समय में तुम
रह रहो हो, उसे जानते हो। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये
अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा है, क्योंकि जब
हमने विश्वास धारण किया था हमारा उद्धार अब उससे
अधिक निकट है। 12"रात" लगभग पूरी हो चुकी है,
"दिन" पास ही है, इसलिए आओ हम उन कर्मों से छुटकारा
पा लें जो अंधकार के हैं। आओ हम प्रकाश के अस्त्रों को
धारण करें। 13इसलिए हम वैसे ही उत्तम रीति से रहें जैसे
दिन के समय रहते हैं। बहुत अधिक दावतों में जाते हुए
खा पीकर धुत्त न हो जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार
में न पड़ें। न झगड़ें और न ही डाह रखें। 14बल्कि प्रभु
यीशु मसीह को धारण करें। और अपनी मानव देह की
इच्छाओं को पूरा करने में ही मत लगे रहो।

दूसरों में दोष मत निकाल

14 जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत
करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा करने के लिए
नहीं। 2कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है,
किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस साग-पात ही खाता है। 3तो
वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को
हीन नहीं समझना चाहिये जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता। वैसे
ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे सब कुछ खाने
वाले को बुरा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर ने
उसे अपना लिया है। 4तू किसी दूसरे घर के दास पर दोष
लगाने वाला कौन होता है? उसका अनुमोदन या उसे
अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है। वह
अवलम्बित रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित होकर
टिके रहने की शक्ति दी।

5और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से श्रेष्ठ
मानता है और दूसरा उसे सब दिनों के बराबर मानता है
तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की बात माननी
चाहिये। 6जो किसी विशेष दिन को मनाता है वह उसे प्रभु
को आदर देने के लिये ही मनाता है। और जो सब कुछ
खाता है वह भी प्रभु को आदर देने के लिये ही खाता है।
क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है। और जो
किन्हीं वस्तुओं को नहीं खाता, वह भी ऐसा इसीलिए करता
है क्योंकि वह भी प्रभु को ही आदर देना चाहता है। वह
भी परमेश्वर को ही धन्यवाद देता है। 7हम में से कोई भी
न तो अपने लिये जीता है, और न अपने लिये मरता है।
8हम जीते हैं तो प्रभु के लिये और यदि मरते हैं तो भी प्रभु
के लिये। सो चाहे हम जियें चाहे मरें, हम हैं तो प्रभु के ही।

9इसीलिये मसीह मरा; और इसीलिए जी उठा ताकि
वह, वे जो अब मर चुके हैं और वे जो अभी जीवित हैं,
दोनों का प्रभु हो सके। 10सो तू अपने विश्वास में सशक्त
भाई पर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने विश्वास में
निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को परमेश्वर
के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होना है। 11शास्त्र में
लिखा है:

"प्रभु ने कहा है, मेरे जीवन की शपथ हर
किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे।
और हर ज़ुबान परमेश्वर को पहचानेगी।"

12सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना
लेखा-जोखा देना होगा।

पाप के लिए प्रेरित मत कर

13सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह
निश्चय करें कि अपने भाई के रास्ते में हम कोई अड़चन
खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये उकसायेंगे।
14प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण मैं मानता हूँ
कि अपने आप में कोई भोजन अपवित्र नहीं है। वह केवल
उसके लिए अपवित्र है, जो उसे अपवित्र मानता है। उसके
लिए उसका खाना अनुचित है। 15यदि तेरे भाई को तेरे
भोजन से ठेस पहँचती है तो तू वास्तव में प्यार का

व्यभिचार ... रख निर्गमन 20:13-15,17
तुझे ... है लैव्य. 19:18

व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू अपने भोजन से उसे ठेस मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने उस तक के लिए भी अपने प्राण तजे। 16सो जो तेरे लिए अच्छा है उसे निन्दनीय मत बनने दे। 17क्योंकि परमेश्वर का राज्य बस खाना–पीना नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता है, शांति है, और पवित्र आत्मा से प्राप्त आनन्द है। 18जो मसीह की इस तरह सेवा करता है, उससे परमेश्वर प्रसन्न रहता है और लोग उसे सम्मान देते हैं।

19इसलिए, उन बातों में लगें जो शांति को बढ़ाती हैं और जिनसे एक दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता मिलती है। 20भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत बिगाड़ो। हर तरह का भोजन पवित्र है किन्तु किसी भी व्यक्ति के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी और भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये। 21माँस नहीं खाना श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी ऐसा नहीं करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता हो।

22अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही रख। वह धन्य है जो जिसे उत्तम समझता है, उसके लिए अपने को दोषी नहीं पाता। 23किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त नहीं है तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके विश्वास के अनुसार नहीं है और वह सब कुछ जो विश्वास पर नहीं टिका है, पाप है।

15 हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये जो शक्तिशाली नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें। 2हम में से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना के साथ कि उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न करे। 3यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं किया था। बल्कि जैसा कि मसीह के बारे में शास्त्र कहता है, "उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया है, मुझ पर आ पड़ा है।"* 4हर वह बात जो शास्त्रों में पहले लिखी गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि जो धीरज और बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे आशा प्राप्त करें। 5और समूचे धीरज और बढ़ावे का स्रोत परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि तुम लोग एक दूसरे के साथ यीशु मसीह के उदाहरण पर चलते हुए आपस में मिल जुल कर रहो। 6ताकि तुम सब एक साथ एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पिता, परमेश्वर को महिमा प्रदान करो। 7इसलिए एक दूसरे को अपनाओ जैसे तुम्हें मसीह ने अपनाया। यह परमेश्वर की महिमा के लिए करो। 8मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि यह प्रकट करने को कि परमेश्वर विश्वसनीय है उनके पुरखों को दिये गए परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने को मसीह यहूदियों का सेवक बना। 9ताकि ग़ैर यहूदी लोग भी परमेश्वर को उसकी करुणा के लिए महिमा प्रदान करें। शास्त्र कहता है:

"इसलिये मैं ग़ैर यहूदियों के बीच तुझे पहचानूँगा
और तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।"

भजन संहिता 18:49

10और यह भी कहा गया है,

"हे ग़ैर यहूदियो, परमेश्वर के चुने हुए
लोगों के साथ प्रसन्न रहो।"

व्यवस्था विवरण 32:43

11और फिर शास्त्र यह भी कहता है,

"हे ग़ैर यहूदी लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो।
और सभी जातियो,
परमेश्वर की स्तुति करो।"

भजन संहिता 117:1

12और फिर यशायाह भी कहता है,

"यिशै का एक वंशज प्रकट होगा
जो ग़ैर यहूदियों के शासक के रूप में उभरेगा।
ग़ैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।"

यशायाह 11:10

13सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण आनन्द और शांति से भर दे। जैसा कि उसमें तुम्हारा विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा से भरपूर हो जाओ।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14हे मेरे भाइयो, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम नेकी से भरे हो और ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हो। 15किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ साफ लिखा है। मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है, उसके कारण यह किया है। 16यानी मैं ग़ैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह का सेवक बन कर परमेश्वर के सुसमाचार के लिए एक

उनका ... है भजन. 69:9

याजक के रूप में काम करूँ ताकि ग़ैर यहूदी परमेश्वर के आगे स्वीकार करने योग्य भेंट बन सकें और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिये पूरी तरह पवित्र बनें।

17सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा का मुझे गर्व है। 18क्योंकि मैं बस उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह ने ग़ैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का रास्ता दिखाने का काम मेरे वचनों, मेरे कर्मों, 19आश्चर्य चिह्नों और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम के चारों ओर मसीह के सुसमाचार के उपदेश का काम मैंने पूरा किया। 20मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं किसी दूसरे व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ। 21किन्तु शास्त्र कहता है:

"जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है,
वे उसे देखेंगे।
और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेंगे।"
यशायाह 32:15

पौलुस की रोम जाने की योजना

22मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार रोकते रहे हैं।

23किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई स्थान नहीं बचा है और बहुत बरसों से मैं तुमसे मिलना चाहता रहा हूँ, 24सो मैं जब स्पेन जाऊँगा तो आशा करता हूँ तुमसे मिलूँगा! मुझे उम्मीद है कि स्पेन जाते हुए तुमसे भेंट होगी। तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का आनन्द लेने के बाद मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के लिए मुझे तुम्हारी मदद मिलेगी। 25किन्तु अब मैं परमेश्वर के पवित्र जनों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। 26क्योंकि मकदूनिया और अखैया के कलीसिया के लोगों ने यरूशलेम में परमेश्वर के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं, उनके लिए कुछ देने का निश्चय किया है। 27हाँ. उनके प्रति उनका कर्तव्य भी बनता है क्योंकि यदि ग़ैर यहूदियों ने यहूदियों के आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा बँटाया है तो ग़ैर यहूदियों को भी उनके लिये भौतिक सुख जुटाने चाहिये। 28सो अपना यह काम पूरा करके और इकट्ठा किये गये इस धन को सुरक्षा के साथ उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से होता हुआ स्पेन के लिये रवाना होऊँगा 29और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह के पूरे आशीर्वादों समेत आऊँगा।

30हे भाइयो, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से आत्मा से जो प्रेम हम पाते हैं, उसकी साक्षी दे कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के प्रति सच्ची प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो 31कि मैं यहूदियों में अविश्वासियों से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति मेरी सेवा को परमेश्वर के पवित्र जन स्वीकार करें। 32ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पास आकर तुम्हारे साथ आनन्द मना सकूँ। 33सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे। आमीन।

रोम के मसीहियों को पौलूस का संदेश

16 मैं किंखिया की कलीसिया की विशेष सेविका हमारी बहन फ़ीबे की तुम से सिफारिश करता हूँ 2कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण करो जैसी रीति परमेश्वर के लोगों के योग्य है। उसे तुमसे जो कुछ अपेक्षित हो सब कुछ से तुम उसकी मदद करना क्योंकि वह मुझ समेत बहुतों की सहायक रही है।

3प्रिस्का और अक्विला को मेरा नमस्कार। वे यीशु मसीह में मेरे सहकर्मी हैं। 4उन्होंने मेरे प्राण बचाने के लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था। न केवल मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि ग़ैर यहूदियों की सभी कलीसिया भी उनके धन्यवादी हैं। 5उस कलीसिया को भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में एकत्र होती है। मेरे प्रिय मित्र इपनितुस को मेरा नमस्कार जो एशिया में मसीह को अपनाने वालों में पहला है। 6मरियम को, जिसने तुम्हारे लिये बहुत काम किया है, नमस्कार। 7मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और यूनियास को, जो मेरे साथ कारागार में थे और जो प्रमुख धर्म-प्रचारकों में प्रसिद्ध हैं, और जो मुझ से भी पहले मसीह में थे, मेरा नमस्कार। 8प्रभु में मेरे प्रिय मित्र अम्पलियातुस को नमस्कार। 9मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस तथा मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को नमस्कार। 10मसीह में खरे और सच्चे अपिल्लेस को नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार। 11यहूदी साथी हिरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के

परिवार के उन लोगों को नमस्कार जो प्रभु में हैं। 12त्रुफेना
और त्रुफोसा को जो प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं,
नमस्कार। मेरी प्रिया परसिस को, जिसनें प्रभु में कठिन
परिश्रम किया है, मेरा नमस्कार। 13प्रभु के असाधारण
सेवक रूफुस को और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही
है, नमस्कार।

14असुंक्रितुस, फ्लगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिर्मोस और
उनके साथी बंधुओं को नमस्कार। 15फिलुलुगुस, यूलिया,
नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी साथी
संतों को नमस्कार।

16तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा एक दूसरे का स्वागत
करो। तुम्हें सभी मसीही कलीसियों की ओर से
नमस्कार।

17हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो
शिक्षा पाई हैं, उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते हैं
और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान
रहो, और उनसे दूर रहो। 18क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु
यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की उपासना करते
हैं। और अपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी बातों से
भोले भाले लोगों के हृदय को छलते हैं। 19तुम्हारी
आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी तक पहुँच चुकी
है। इस लिये तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु मैं चाहता हूँ
कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान बने रहो और बदी के
लिये अबोध रहो।

20शांति का स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे
पैरों तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर
अनुग्रह हो।

21हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे
यहूदी साथी लूकियुस, यासोन तथा सोसिपत्रुस की ओर से
तुम्हें नमस्कार। 22इस पत्र के लेखक मुझ तिरतियुस का
प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

23मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस
का तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर का ख़जांची है
और हमारे बन्धु क्वारतुस का तुम को नमस्कार।
24[“हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ
रहे। आमीन।”]*

परमेश्वर की महिमा

25उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार–
यानी यीशु मसीह के सन्देश के जिस सुसमाचार का मैं
उपदेश देता हूँ उसके अनुसार–तुम्हें सुदृढ़ बनाने में समर्थ
है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्णसत्य युगयुगान्तर से छिपा
हुआ था। 26किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के आदेश से
भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा अब हमें और ग़ैर यहूदियों
को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे विश्वास से पैदा
होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो। 27यीशु मसीह द्वारा उस
एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त काल तक महिमा
हो। आमीन!

पद 24 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 24 जोड़ा गया है।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html